International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-4 september- 2015 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

दलित समाज का संघर्ष और ओमप्रकाश वाल्मीकि का कथा साहित्य

परस राम पंचोली
व्याख्याता हिन्दी
राजकीय शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय , चेचट (कोटा)

दलित साहित्य दलितों की पीडा, उत्पीडन, षोशण, इन सबके विरुद्ध उनके आक्रोष तथा परिवर्तन के संकल्प का साहित्य है जो जातिविहीन समाज का सपना पालता है। यह बहिश्कृत समाज को मुख्य समाज के समकक्ष लाने का प्रयास करता है। इसमें सहानुभूति की नहीं, सह–जीवन की कामना है। दलितों द्वारा लिखे जाने पर ही इसमें अनुभूति की सच्चाई आ जाएगी। इसलिए दलितों द्वारा लिखित साहित्य को ही आजकल दलित साहित्य माना जाता है। दलित साहित्य बाबा साहब अंबेडकर की विचारधारा को अपना मूल स्रोत मानता है। महात्मा बुद्ध और ज्योबिता फुले के विचारों से भी दलित साहित्य प्रभावित है।आज दलित षब्द का प्रयोग उन षोशित, पीडित जन–समुदायों के लिए होता है, जिनका युगों से आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक षोशण हो रहा है। ओमप्रकाष वाल्मीकि जी के षब्दों में – ''दलित षब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जो समाज–व्यवस्था के तहत सबसे निचली पायदान पर है। वर्ण–व्यवस्था ने जिसे अछूत या अत्य ंज की श्रेणी में रखा। उसका दलन हुआ, षोशण हुआ। इस समूह को ही संविधान में अनुसूचित जातियाँ कहा गया है, जो जन्मना अछूत है।

1. प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में वैदिक काल से लेकर दलितों की भागीदारी है। वैदिक काल के ऐतरेय, कवश, सत्यकाम, अंगीरस आदि ऋशि षूद्र या दलित जाति के माने जाते हैं। व्यास मछुआरे क` बेटे थे और आदिकवि वाल्मीकि भील जाति के थे। अपभ्रंष काल में सिद्ध, जैन, नाथ साहित्य में भी दलितों की अभिव्यक्ति मिलती है। चौरासी सिद्धों में चमार, धोबी, लोहार, मछुआ आदि का उल्लेख मिलता है। सिद्ध साहित्य में सबसे पहले वर्ण, जाति तथा धार्मिक आड ंबर का विरोध मिलता है। भक्तिकालीन निर्गुण संत कवि जाति–पाँति, छुआछूत, धार्मिक आड ंबर, अंधविष्वास, अनाचार, सामाजिक भेद–भाव आदि क` विरोधी थे। उनकी वाणी में दलित च`तना मुखरित है।

आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य की षुरुआत आठवें दषक में हुई है। आज दलित साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, नाटक आदि विभिन्न विधाओं के माध्यम से दलित चेतना प्रस्फुटित

होती है। दलित रचनाकार अपनी रचना में अपने जीवन के खुरदरे यथार्थ तथा दर्द की अभिव्यक्ति करता है, साथ ही इसमें बुरी सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ उनका आक्रोष तथा जातिविहीन, समता पर आधारित आदर्ष समाज की स्थापना की कामना भी है। दलित रचनाकार मुख्यधारा साहित्य को हिन्दू वर्ण–व्यवस्था, सामंतवाद, ब्राह्मणवाद आदि की उपज मानता है, जिसने दलितों की समस्याओं को नज़रंदाज़ किया है। कहीं–कहीं दलितों के प्रति उसमें सहानुभूति या करुणा प्रकट की गयी है, कि ंतु उन्हें दल–दल से बचाने का प्रयास उसमें नहीं है। इसलिए दलित लेखकों ने अलग खडा होकर अपनी राह तलाषने का प्रयास किया है, दलित साहित्य जिसका परिणाम है। दलित अपने साहित्य को समाज में बदलाव लाने के लिए औजार के रूप में इस्तेमाल करता है। दलित साहित्य से दलित समाज यह समझने लगा कि अपने दुख, दर्द, तनाव, संघर्श आदि छिपाने की चीज़ें नहीं हैं बल्कि आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य को नयी दिषा, दषा और ऊर्जा प्रदान करनेवाले महान रचनाकार हैं ओमप्रकाष वाल्मीकि। उन्होंने अंधेरी दलित पगड ंडियों में क्रांति की मषाल जलाकर नयी चेतना की रोषनी फैला दी है। उन्हें हिन्दी दलित साहित्य का आधारस्तंभ कहना अनुचित नहीं होगा। दलित माहौल में रूपायित ओमप्रकाष वाल्मीकि जी का रचनात्मक व्यक्तित्व अन्य पार ंपरिक रचनाकारों क` समान नहीं था। जातिविहीन, वर्ण रहित, समत्व पर आधारित आदर्ष समाज की स्थापना उनके साहित्य का ध्येय है। आज जनता की बोलचाल की भाशा और सरल षैली में दलित समाज के खुरदरे यथार्थ का चित्रण कर उन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में क्रांति मचा दी है। जयप्रकाष कर्दम जी ने बिल्क ुल सही कहा है – ''सच कहिए तो वह हिन्दी दलित साहित्य का पर्याय हैं। हिन्दी दलित साहित्य में यदि किसी लेखक को लीजेंड कहा या माना जा सकता है तो निर्विवाद रूप से वह ओमप्रकाष वाल्मीकि हैं।''

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने हिन्दी क्षेत्र के दलितों और वंचितो को अपनी आवाज प्रदान की हैं। उनकी आत्मकथा 'जूठन' उनके जन्म के आत्मकथात्मक लेख और 1950 के दशक के नए स्वतंत्र भारत में अस्पृश्य, दलित के रूप में अभिषेक, भारत के अंदरूनी सूत्र के नजरिये से दलित जीवन के पहले चित्रणों में से एक है। उन्होंने 'जूठन' में साहसपूर्वक अपने जीवन के कटु अनुभवों का समावेश किया हैं। इसमें वाल्मीकि जी ने कहा है कि 'हजारों वर्षों से चली आ रही दलित जीवन की कथा हमारे समाज का कृष्ण पक्ष है।' उन्होंने अपनी लेखनी से दलितों को एक नई दिशा प्रदान की है। इस कारण उनका योगदान सराहनीय है। उनका समकालीन भारतीय हिन्दी साहित्य में यह योगदान महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से दलित लेखकों में स्वाभिमान का संचार करते हुये दलित लेखन की धारा को एक नया मोड़ दिया हैं।

वाल्मीकि जी की आत्मकथा 'जूठन' में दलित समुदाय पूर्ण रूप से पीड़ित, अपमानित और उत्पीड़न का सामना करता है। उनके अनुसार दलित जीवन बेहद दर्दनाक है, अनुभवों से जलता है, अनुभव जो साहित्यिक सृजन में जगह खोजने का प्रबंधन नहीं करते। हम एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था में बड़े हो चुके हैं, जो दलितों के प्रति अत्यंत क्रुर, अमानवीय तथा करूणामय ळें

वाल्मीकि जी 'जूठन' में जाति भेदभाव को दर्शाते हुए कहते है 'जाति' भारतीय समाज का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उन्होंने बताया 'जाति' पैदा होने वाले व्यक्ति के नियंत्रण में नहीं है। यदि यह नियंत्रण में होता तो, मैं भंगी परिवार में क्यों जन्म लेता ? जो लोग खुद को इस देश की सांस्कृतिक विरासत को मानक कहते हैं, क्या उन्होंने तय किया कि वे किन घरों में पैदा होंगे – उच्च या निम्न ?

'जूठन' के द्वारा वाल्मीकि ने संदेश दिया है कि 'जाति' ही व्यक्ति की पहचान क्यों ?' अर्थात मनुष्य अपने कर्मों के आधार पर ही उच्च स्थान प्राप्त करता है न कि जाति के आधार पर। इस सत्य को उद्घाटित करने के लिए उन्होंने 'जूठन' में कई ऐसे प्रसंग व घटनाएं निरूपित की है जो अत्यन्त ही सत्य सिद्ध होती है। जाति के कारण ओमप्रकाश वाल्मीकि को अपने जीवन में कई बार अपमानित एवं प्रताड़ित होना पड़ा था। उनकी आत्मकथा 'जूठन' में एक दलित जीवन के दर्दनाक अनुभवों का चित्रण किया गया है जिसकी महत्त्वपूर्ण घटनाएं तथा प्रसंग इस प्रकार है –

ओमप्रकाश वाल्मीकि एक दलित समुदाय के 'चूहड़ा' जाति से जिनका कार्य गंदगी साफ करना, झाड़ू लगाना, साफ–सफाई के कार्य करना, जूठन साफ करना, सूअर चराना आदि कार्य करना था, जिससे स्वयं को अपमानित महसूस करना होता था। ऐसे में उनके बचपन का माहौल ऐसा था कि चारों ओर गंदगी भरी होती थी। ऐसी दुर्गंध कि एक मिनट में साँस घुट जाती थी। तंग गलियों में घूमते सूअर, नंग–धडंग बच्चें, कुत्तें, रोजमर्रा के झगड़े आदि ऐसे गंदे वातावरण में वाल्मीकि का बचपन बीता। उस समय के प्रसंग वाल्मीकि जी ने 'जूठन' के द्वारा बताने का प्रयास किया है जो दलित जीवन की त्रासदी को अजागर करते है।

बात उस समय की है जब ओमप्रकाश वाल्मीकि के घर में छोटे–बड़े सभी सदस्य कोई न कोई काम करते थे। फिर भी उन्हें दो जून रोटी के लिए तगाओं के घरों में साफ–सफाई से लेकर खेती–बाड़ी और मेहनत–मजदूरी के सभी कार्य करने पड़ते थे। यहाँ तक की रात–बेरात बेगार करनी पड़ती थी जिसके बदले मे कोई पैसा या अनाज नहीं मिलता था। अगर बेगार करने से मना किया जाता था तो गाली–गलौच के साथ–साथ प्रताड़ना भी सहनी पड़ती थी। नाम लेकर पुकारने की किसी भी सवर्ण को आदत नहीं थी। इसलिए उनके लिए उम्र में बड़ा हो तो 'ओ चूहड़े' और उम्र में छोटा या बराबर हो तो 'अबे चूहड़े' जैसे नाम से सम्बोधित कर अपमानित किया जाता था।

उस समय जाति व्यवस्था के कारण उत्पन्न अस्पृश्यता का ऐसा माहौल था कि कुत्तें–बिल्ली, गाय–भैंस आदि जानवरों को छूना बुरा नहीं माना जाता था जबकि 'चूहड़े' का स्पर्श हो जाए तो पाप माना जाता था। इस तरह उन्हें सामाजिक स्तर पर इंसानी दर्जा प्राप्त नहीं था। वे सिर्फ उपभोग की वस्तु थे कि काम लिया और फेंक दिया। ऐसे अभाव, अस्पृश्यता, अपमान और शोषण के बीच उनका बचपन व्यतीत हुआ। उस समय सम्पूर्ण भारत में दलितों की ऐसी ही सामाजिक आर्थिक स्थिति थी।

वाल्मीकि जी ने अपने जीवन में कई कष्टपूर्ण अनुभवों को दर्ज किया है, जिनका उन्हें अपने बचपन और युवाकाल के दौरान सामना करना पड़ता था, क्योंकि वह 'चुहड़ा' समुदाय से थे। बचपन में जब ओमप्रकाश को प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए उनके पिताजी गये तब उन्हें प्रवेश देने से मना कर दिया गया। क्योंकि वह एक दलित समुदाय से थे। बच्चे को शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से उनके पिताजी ने कई बार स्कूल के चक्कर काटे और हेडमास्टर से अनुरोध किया तब जाकर ओमप्रकाश को विद्यालय में प्रवेश मिला। विद्यार्थी जीवन में कक्षा की चार दीवारी के भीतर भी उन्होंने भेदभाव और अस्पृश्यता का अनुभव किया। उन्हें दूसरे बच्चों से दूर बैठना पड़ता था। उच्चवर्ग के विद्यार्थियों के द्वारा स्कूल में बिना किसी कारण के उन्हें पीटा जाता था। चूंकि वह एक अनुसूचित जाति समुदाय के थे।

इसी क्रम में ओमप्रकाश जब स्कूल में साफ–सुथरे कपड़े पहनकर जाते थे तो उच्चवर्ग के बच्चें उन्हें 'अबे चूहड़े का नये कपड़े पहनकर आया है, और जब पुराने कपड़े पहनकर जाते थे तो 'अबे चूहड़े का दूर हट बदबू आ रही है।' जैसे अपशब्द कहकर चिढ़ाते तथा अपमानित करते थे। ओमप्रकाश को बचपन में ही ऐसे शिक्षक मिले जिससे उन्हें शिक्षक नाम से ही घृणा होने लगी। चतुर्थ कक्षा में शिक्षक द्वारा बिना कारण के ही पिटाई करना तथा माँ–बहन की गालियाँ दी गई। यह उनके साथ इसलिए किया गया कि वे दलित समुदाय से थे।

विद्यालय में ही एक दिन उनसे शीशम के पेड़ से पत्ते–डालियाँ तुडवाकर झाड़ू बनवाया गया और लगातार तीन दिन तक पूरी स्कूल में झाड़ू से साफ–सफाई करवायी गई साथ ही तीन दिन तक पढ़ने भी नही दिया गया। आर्थिक अभाव और परिवार की नाजुक हालात में ओमप्रकाश को पाँचवी कक्षा से छठी में प्रवेश लेना पड़ा। ओमप्रकाश को बचपन में ही अपने विद्यार्थी जीवन में पारिवारिक जिम्मेदारी निभाने के लिए घर के सुअर चराने का कार्य भी करना पड़ा। इस तरह उन्हें अपने दलित जीवन की त्रासदी को सहन करना पड़ा।

विद्यार्थी जीवन में अभाव और आर्थिक विवशता के कारण ओमप्रकाश को मरे हुए पशु की खाल उतारकर मुजफ्फरनगर बाजार में बेचने भी जाना पड़ा। पशु बली के एक प्रसंग में – सूअर के बच्चे आर्थिक आय का प्रतीक है, जिसकी बली चढ़ाने का कार्य भी बालक ओमप्रकाश ने किया। परीक्षा के समय शिक्षक द्वारा जबरन बेगार भी करवाया गया। अतः अभाव और आर्थिक हालात के कारण ओमप्रकाश को बीच में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी। तथा उन्हें तकनीकी प्रशिक्षण के लिए तैयार होना पड़ा। इस प्रकार उन्हे अपने विद्यार्थी जीवन में भी दलित जीवन की त्रासदियों का सामना करना पड़ा।

3. निष्कर्ष

दलित समाज भारतीय जाति–व्यवस्था को ही अपनी समस्याओं का मूल कारण समझते हैं। जाति के नाम पर सवर्ण समाज उनका दमन, षोशण तथा उपेक्षा करते हैं, उनसे अमानवीय व्यवहार करते हैं। यह

उनके जीवन को दूभर बनाता है। ओमप्रकाष वाल्मीकि जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से दलित जीवन की सही प्रतिलिपि प्रस्तुत की है। उनमें दलितों के भोगे हुए यथार्थ का चित्रण है, जाति, धर्म, संस्कृति और ईष्वर की आड में सहस्राब्धियों से रचनेवाली साजिष की पोल खुलती है। दलितों के साथ होनेवाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आक्रोष है, सत्ता और राजनीति पर व्यंग्य है तथा जातिविहीन, समानता–युक्त समाज की स्थापना की कामना है। बोलचाल की सरल, सहज और स्वाभाविक भाशा में, चिरपरिचित प्रतीकों और बिंबों के सहारे तथा पौराणिक मिथकों के नये अर्थ और संदर्भ में प्रयोग करके उन्होंने अपने भावों और विचारों को अधिक संप्रेशणीय बनाया है। ओमप्रकाष वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में जीवित मनुश्य की यातनाओं का चित्रण किया है। वे दलित–बोध के सषक्त रचनाकार थे। दलित समाज का सच्चा चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है। अपनी कहानियों के संबन्ध में 'छतरी' की भूमिका में वे स्वयं लिखते हैं – ''दलित जीवन की विसंगतियों, विशमताओं, अनुभवों, संघर्शों, सरोकारों और उनकी जिजीविशा को उकेरती ये कहानियाँ भारतीय जीवन की सामाजिक व्यवस्था के भीतर छिपी अमानवीयता को भी उघाडने की कोषिष करती है।'' उनकी कहानियों में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। ओमप्रकाष वाल्मीकि जी ने अपनी कविता, कहानी और आत्मकथा क` माध्यम से हिन्दी दलित साहित्य को समृद्ध किया है, साथ ही एक दलित विचारक और आलोचक क` रूप में अपने अलग दृश्टिकोण से हिन्दी साहित्य क` क्षेत्र में हलचल मचा दी है।

संदर्भ सूचीः

1. आलेख–डॉ. पवन कुमार शर्मा, दलित चेतना और हिन्दी उपन्यास

2. आलेख–दलित साहित्य ;ीजजचरूध्धपणूपापचमकपंण्वतहद्ध

3. ओमप्रकाश वाल्मिकी, आत्मकथा 'जूठन'

4. आलेख–डॉ. पवन कुमार शर्मा, दलित चेतना और हिन्दी उपन्यास

5. कंवल भारती, दलित साहित्य की अवधारणा

6. आलेख–जयसिंह मीणा, दलित साहित्य : शालीनता का प्रश्न

7. आलेख–डॉ. पवन कुमार शर्मा, दलित चेतना और हिन्दी उपन्यास

8. आलेख–दलित साहित्य आंदोलन : दलित साहित्य का मूल

9. रवीन्द्र प्रभात, ताकि बचा रहे लोकतंत्र, प्रकाशक–हिन्द युग्म, नई दिल्ली

10. डॉ. एन. सिंह, दलित साहित्य के प्रतिमान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

11. आलेख–डॉ. श्रीमती तारा सिंह, दलित विमर्श

12. आलेख–दलित विमर्श, इण्टरनेट से, 13 नवम्बर, 2014